# 1 तीमुथियुस श्रृंखला

# अध्याय 4: विश्वासियों के लिए एक आदर्श बनें

**रविवार, अप्रैल 09, 2017**

हम 1 तीमुथियुस पर अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

## संक्षिप्त समीक्षा

स्मरण रहे कि, 1 तीमुथियुस एक पत्र है जिसे प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा था, जिसे उन्होंने इफिसुस की कलीसिया का प्रभारी नियुक्त किया था। तीमुथियुस ने लगभग 18 वर्षों तक पौलुस के अधीन सेवा की। तीमुथियुस अब एक युवा व्यक्ति है, जिसकी आयु लगभग 34 या 35 वर्ष है। पौलुस मुख्य रूप से तीमुथियुस को यह निर्देश देने के लिए लिख रहा है कि इफिसुस की कलीसिया का नेतृत्व और देखभाल कैसे की जाए।

आइए 1 तीमुथियुस अध्याय 4 पढ़ें।

अब आइए इस अध्याय का अध्ययन करें।

**1 तीमुथियुस 4:1-5**

**[1]परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे।**
**[2]यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है,**
**[3]जो विवाह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएँ।**
**[4]क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है, और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए,**
**[5]क्योंकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है।**

पौलुस एक बार फिर तीमुथियुस को भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं के कार्यों के बारे में याद दिला रहा है और चेतावनी दे रहा है जो हर तरह की गलत शिक्षाओं और विचारों को बढ़ावा देते हैं, जो लोगों को विश्वास से दूर खींच सकते हैं।

भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शक्तियों द्वारा सशक्त पुरुष और स्त्रियाँ जो ऐसी शिक्षाओं को बढ़ावा देते हैं (अ) कपट में झूठ बोलते हैं और (ब) अपना स्वयं का विवेक दाग चुके होते हैं।

वे ऐसे नियम बनाते हैं जो वास्तव में लोगों के जीवन को नियंत्रित और निर्देशित करते हैं, जैसे कि विवाह करने से रोकना, कौन सा भोजन खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए।

इसलिए, जब आप ऐसी शिक्षा सुनते हैं जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध जाती है और आपको, आपके विकल्पों को, और आपके जीवन जीने के तरीके को नियंत्रित और हेरफेर करती है, तो आपको सावधान रहना होगा।

इसके बजाय, पौलुस हमें बताता है कि हम में से जो सत्य को जानते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, हम कोई भी भोजन खा सकते हैं-हमें बस परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के साथ इसे पवित्र और शुद्ध करना है। (यही कारण है कि हम खाने से पहले 'धन्यवाद की प्रार्थना' करते हैं!)।

(ध्यान दें: देखें कि पौलुस तीमुथियुस को लिखे इस पत्र में बार-बार विवेक के बारे में कैसे बात करता है।)

**1 तीमुथियुस 4:6**
**यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा; और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जो तू मानता आया है, तेरा पालन–पोषण होता रहेगा।**

दुष्टात्माओं की गतिविधियों को देखते हुए, जो लोगों को भरमाने और विश्वास से दूर ले जाने के लिए गलत शिक्षाओं को बढ़ावा देती हैं, तीमुथियुस की भूमिका—और किसी भी आत्मिक मार्गदर्शक की भूमिका—विश्वासियो को निर्देश देना और विश्वास के वचनों और खरी शिक्षा में उनका पालन-पोषण करना है।

विश्वासियों को विश्वास के वचनों और अच्छी शिक्षा में पोषित होने की आवश्यकता है। यही कारण है कि यहाँ ए.पी.सी. में हम परमेश्वर के वचन की सेवकाई पर इतना जोर देते हैं। यह विश्वासी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से उस समय को देखते हुए जिसमें हम जी रहे हैं।

गलती और झूठी शिक्षा का मुकाबला करने का सबसे अच्छा तरीका लोगों को सत्य में स्थापित करना है।

एक अच्छा सेवक सबसे पहले स्वयं विश्वास के वचनों और अच्छी शिक्षा में स्थापित होता है और अपने जीवन में सावधानी से उनका पालन करता है। तब वह दूसरों को निर्देश देने और उनका पालन-पोषण करने में सक्षम होता है।

**1 तीमुथियुस 4:7-9**

**[7] पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह; और भक्ति की साधना कर।**
**[8]क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।**
**[9]यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है।**

परमेश्वर के जन के रूप में, पौलुस तीमुथियुस को भक्ति के लिए अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करता है, अर्थात्, भक्ति या पवित्रता के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करें। भक्ति, पवित्रता और आत्मिक बातों में बढ़ौतरी प्रशिक्षण के माध्यम से आती है।

प्रशिक्षण सामान्य तौर पर आसान नहीं होता। इसके लिए अनुशासन, कड़ी मेहनत और त्याग की आवश्यकता होती है।
इसी तरह भक्ति में विकसित होने और बढ़ने के लिए—हमें खुद को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
ऐसा करने के लाभ इस जीवन और आने वाले जीवन, दोनों में हैं।
यह वह सत्य है जो पूरी तरह स्वीकार करने योग्य है—जिसे हर किसी को अपनाना चाहिए और तत्परता से स्वीकार करना चाहिए।

*(पवित्रता और आत्मिक जीवन में बढ़ने के व्यावहारिक तरीकों के साथ लोगों को चुनौती दी जा सकती है)*

**1 तीमुथियुस 4:10-11**

**[10]क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो सब मनुष्यों का और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।**
**[11]इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह।**

परमेश्वर के सेवकों के रूप में हम इसके लिए परिश्रम कर रहे हैं—परमेश्वर के लोगों को विश्वास के वचनों और खरी शिक्षा में स्थापित करना, और स्वयं को पवित्रता में प्रशिक्षित करना। जैसे-जैसे हम इसके लिए परिश्रम करते हैं, हम निंदा भी सहते हैं (हमारे बारे में बुरा बोला जाता है, अपमान किया जाता है)... लेकिन हम जीवित परमेश्वर पर भरोसा करते हैं जो हमारा उद्धारकर्ता है।

पौलुस तीमुथियुस को "आज्ञा देने और सिखाने" के लिए प्रोत्साहित करता है।

आज्ञा देने का अर्थ है स्पष्ट निर्देश देना और परमेश्वर के जिस वचन को तुम सिखाते हो, उसके प्रति आज्ञाकारिता की अपेक्षा करना।

**1 तीमुथियुस 4:12**
**कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल–चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।**

भले ही तीमुथियुस युवा था, पौलुस उसे "विश्वासियो के लिए एक आदर्श बनने" के लिए प्रोत्साहित करता है। एक अगवे के रूप में वह मापदंड निर्धारित करता है, वह एक आदर्श है। तब कोई उसकी जवानी को तुच्छ नहीं समझेगा।

इन बातों में आदर्श बनें:
वचन, बोली, जो आप कहते हैं
चाल-चलन, जीवन जीने का तरीका, व्यवहार, आप कैसे रहते हैं
प्रेम, आप लोगों से कैसे प्रेम करते हैं
आत्मा, आप वास्तव में किस प्रकार के व्यक्ति हैं, आपका स्वभाव, आपका चरित्र, आप वास्तव में कौन हैं
विश्वास, परमेश्वर पर आपका भरोसा
पवित्रता, पवित्र जीवन

**1 तीमुथियुस 4:13**
**जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने, और उपदेश देने, और सिखाने में लौलीन रह।**

इन बातों पर ध्यान दें:
पढ़ने, पवित्रशास्त्र का सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाना
उपदेश, पवित्रशास्त्र से प्रचार करना, प्रोत्साहित करना, प्रेरित करना, सांत्वना देना
शिक्षा, पवित्रशास्त्र से शिक्षण, निर्देश देना
ये तीन चीजें स्थानीय कलीसिया में होनी ही चाहिए: परमेश्वर के वचन का पढ़ा जाना, उसका प्रचार और उसकी शिक्षा।

**1 तीमुथियुस 4:14**
**उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।**

पौलुस तीमुथियुस को प्रोत्साहित करता है कि वह उस वरदान की उपेक्षा न करें जो उसके भीतर है। आत्मिक बातें और वरदान प्रदान किए जा सकते हैं। हालाँकि, उनका उपयोग या अभ्यास करना आवश्यक है, अन्यथा वे निष्क्रिय हो जाते हैं।

**1 तीमुथियुस 4:15**
**इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।**

पौलुस तीमुथियुस को प्रोत्साहित करता है कि वह:
मनन करें या गंभीरता से विचार करें, इन बातों के बारे में सोचें
स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दें इन कार्यों को करने के लिए
यदि वह ऐसा करता है, तो उसकी बढ़ौतरी / उन्नति दूसरों को स्पष्ट दिखाई देगी।

**1 तीमुथियुस 4:16**
**अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।**

एक अंतिम बात और कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण।
पौलुस तीमुथियुस को अपने स्वयं के जीवन और वह जो सिखाता है, उस पर नजर रखने का निर्देश देता है।
आत्मिक अगुवों के रूप में हमें स्वयं को अनुशासित करने (निश्चित रूप से पवित्र आत्मा की सहायता से) की इस क्षमता की आवश्यकता है। हमें स्वयं पर नजर रखने, और हम जो सिखाते और प्रचार करते हैं उस पर ध्यान देने में सक्षम होना चाहिए।

इस प्रकार हम अपनी और उन लोगों की रक्षा करेंगे जो हमें सुनते हैं और हमसे सीखते हैं।

## मुख्य शिक्षा

**पद 12: विश्वासियों के लिए एक आदर्श बनें**
एक आत्मिक अगुवे के रूप में पौलुस तीमुथियुस को एक उदाहरण पेश करने का निर्देश देता है ताकि अन्य लोग उसका अनुसरण कर सकें, भले ही वह युवा हो या उसके पास अनुभव की कमी हो, आदि।

# उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
**यूट्यूब:**https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
**वेबसाइट:** https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
**चर्च:** https://apcwo.org
**निःशुल्क संदेश**: https://apcwo.org/resources/sermons
**निःशुल्क पुस्तकें:** https://apcwo.org/books/Hindi
**दैनिक भक्ति-वचन:** https://apcwo.org/resources/daily-devotional
**यीशु मसीह:** https://examiningjesus.com
**बाइबल कॉलेज:** https://apcbiblecollege.org
**ई-लर्निंग:** https://apcbiblecollege.org/elearn
**वीकेंड स्कूल्स:** https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
**काउंसलिंग:** https://chrysalislife.org
**संगीत:** https://apcmusic.org
**मिनिस्टर्स फेलोशिप:** https://pamfi.org
**चर्च ऐप:** https://apcwo.org/app
**चर्चेस:** https://apcwo.org/ministries/churches
**विश्व मिशन:** https://apcworldmissions.org